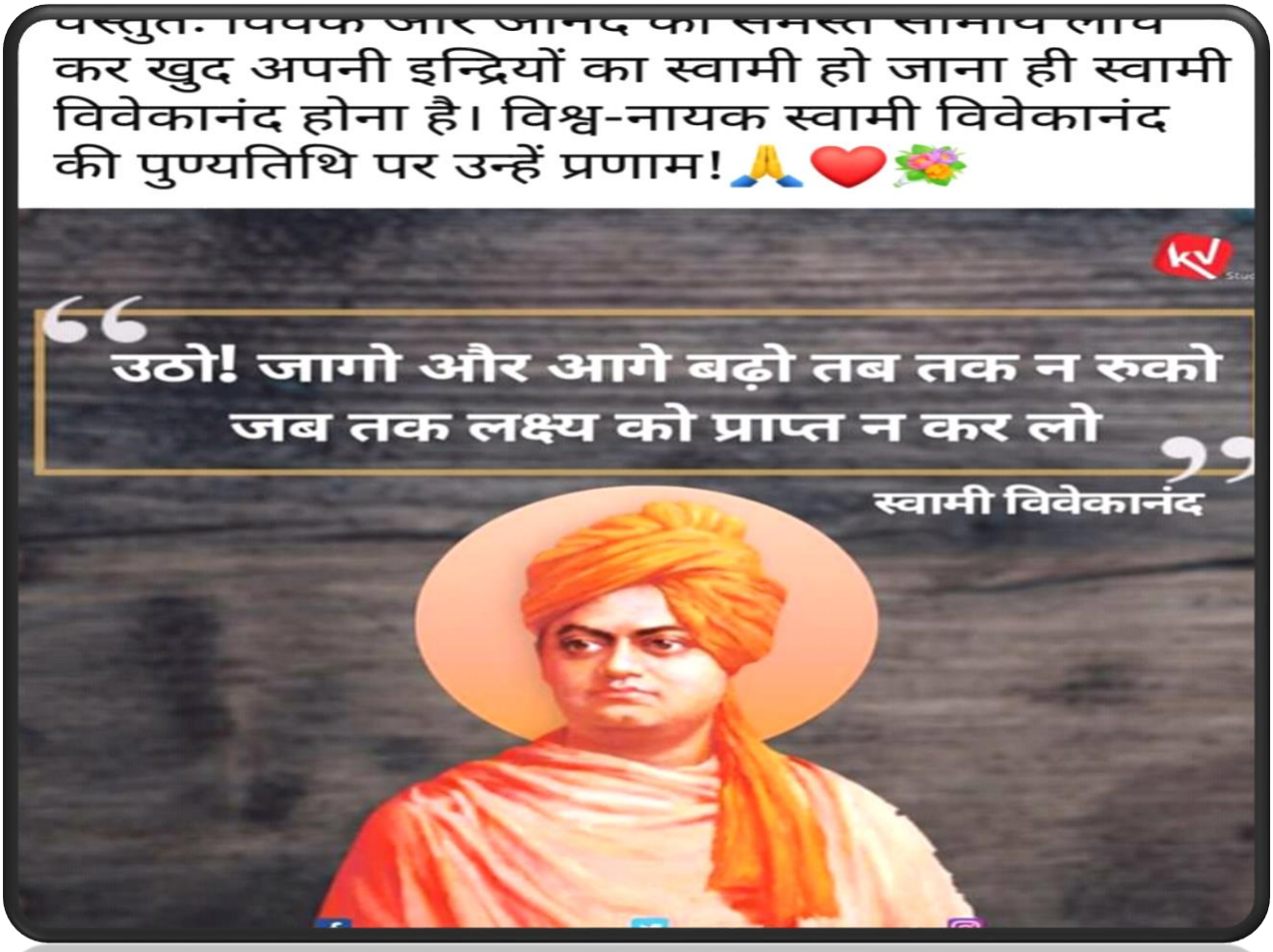

विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ , लक्खीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग -दशम, विषय-हिन्दी 🌷🌷.

दिनांक- ४/७/२०.

। अध्ययन-सामग्री ।। .

सुप्रभात बच्चों , आज फिर हम बालगोबिन भगत पाठ की चर्चा करेंगे :-

.पिछली कक्षा में आपने पढ़ा कि बालगोबिन भगत अपनी निश्चित दिनचर्या का पालन करने वाले व्यक्ति थे ।

अब आगे ....

कल के गृहकार्य के रूप में विवेकानंद के जीवन-परिचय को लिखें ।

मे कितनी भी उमस भरी शाम क्यों ना हो शीतल कर देते । अपने घर के आंगन में आसन जमा बैठते ।

गांव के उनके कुछ प्रेमी भी जुट जाते खंजड़ियों और करतालों की भरमार हो जाती ।एक पद बालगोबिन भगत कह जाते उनकी प्रेमी -मंडली उसे दोहराती तिहराती।

धीरे-धीरे स्वर ऊंचा होने लगता एक निश्चित ताल, एक निश्चित गति से उस्ताद स्वर के चढ़ाव के साथ श्रोताओं की मन में भी ऊपर उठने लगते । धीरे-धीरे मन तन पर हावी हो जाता । होते होते एक क्षण ऐसा आता कि बीच में खंजरी लिए बालगोबिन भगत नाच रहे हैं और उनके साथ ही सबके तन और मन नृत्य शील हो उठते हैं ।सारा आंगन नृत्य और संगीत से ओतप्रोत है ।

बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जब उनका बेटा मरा ।इकलौता बेटा था वह ! कुछ सुस्त और कुछ बोदा -सा ।किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और मानते । उनकी नजर में ऐसे आदमियों पर ज्यादा नज़र या प्यार रखनी चाहिए, क्योंकि ये निगरा नी और प्यार के ज्यादा हकदार होते हैं । बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, बहू बहुत सुभग और सशील मिली थी ।घर की पूरी प्रबंधन की बनकर उन्हें जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया था ।

शेष कल

. दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।